भक्ति सार

भक्ति सार

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।।

रामजी ! राम !! राम !!!

संकलनकर्ता : प्रेम शर्मा (रामजी)

आरती

ज्योति से ज्योति जगाओ
गुरु जी, ज्योति से ज्योति जगाओ
हे योगेश्वर हे ज्ञानेश्वर
हे सर्वेश्वर हे परमेश्वर
निज कृपा बरसाओ ।

सद्गुरु ज्योति· ···

(२)

हम बालक तेरे द्वार पे आये
मगल दरस दिखाओ ।

सद्गुरु ज्योति·····

(३)

शीश झुकाय करें तेरी आरती
प्रेम सुधा बरसाओ ।

सद्गुरु ज्योति·····

(४)

अन्तर में युग-युग से सोई
चिन्तन शक्ति जगाओ ।

सद्गुरु ज्योति·····

(५)

सांची ज्योति जगे हृदय में
सोऽहँ नाद जगाओ ।

सद्गुरु ज्योति·····

(६)

जीवन मुक्तानन्द अविनाशी
चरणन शरण लगाओ ।

सद्गुरु ज्योति·····

भूमिका

अपने प्रभू से मागें भी तो क्या मागें, ससांर की सारी चीजे तो नश्वर है। धन आदि पुत्र कलत्रादि अगर मिल भी गये तो क्या हुआ, क्योंकि यह तो बिछुड ही जाने है आज नही तो कल।

"क्या मांगू कुछ थिर न रहीइ
देखत नयन चलिओ जग जाई"

(गुरुवाणी

फिर हम क्या मागें ?

ऐसी वस्तु मागें जो यहां पर भी काम आये और आगे भी हमारे साथ चले। वह कौन सी चीज है।

उत्तर :- राम नाम

प्रश्न :- वह कहां से मिलता है ?

उत्तर :- केवल उस की कृपा से मिल सकता है।

प्रश्न :- कृपा कैसे होती है ?

उत्तर :- जब हम साध संगत में बैठ कर एक मन बुद्धि और चित्त से एकग्र हो कर मागें और रोज मागें कभी तो सुनाई होगी। मांगने के लिए भी तो विशेष मंत्र होने चाहिए जो (Registered) रजिस्ट्रड हो। सो आओ तो मागें। पहले कृपा मागें। फिर ऐसी बुद्धि मांगे और उस के द्वार के भिखारी बन कर मागें। गुरुवाणी के द्वारा या रामायण के द्वारा मागें।

म मांगने का समय

सवेरे उठ कर नहा धोकर,
एकान्त में बैठ कर
यह सारे मन्त्र बोले

(आत्मा के लिए नाश्ता)

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला

करो दया, करो दया, करो दया, मेरे सांई,
ऐसी मति दीजे मेरे ठाकुर सदा २ तुध ध्याई

"स्वास स्वास सिमरु गोविन्द, मन अन्तर की उतरे चित"

जाचक जन जचै प्रभु दान
कर कृपा देवो हरि नाम
साध जना की मांगू धूरि
पार ब्रहम मेरी श्रद्धा पूरे
सदा २ प्रभु के गुण गांऊ
स्वास २ प्रभु तुम्हे ध्याऊ
चरण कमल सिऊ लागे प्रीत
एक ओट एको आधार
नानक मागें नाम प्रभु सार

मंगल भवन अमंगल हारी
दुबहु सो दशरथ अजर विहारी

१

"दीन दयाल विरद्ध सभारी
हरो नाथ मम सकंट भारी"

२

"राम कृपा नाशहीं सब रोगा
जो एही भांति बने सयोंगा"

३

जां पर कृपा राम की होई
तां परकृपा करे सब कोई

४

राखा एक हमारा स्वामी
सगल घटा का अन्तरयामी

५

ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे
हरि नानक विसार न काहू नेरे

६

जगत जलधा राख लें
प्रभु अपनी कृपा धार

तित द्वारे उभरे
तिते ले हो उभार

सतगुरु मुख वेखालिआ
सच्चा शब्द विचार
नानक अवर न सूझई
हरि विन बख्शन हार

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणनम् त्वमेव
त्वमेव सर्वम मम देव देव

श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम
शकंर हरि ओ३म जय २ सिया राम
जय २ हनुमान । 9-8184

भजन १

हरे राम हरे राम हरे राम हरे
जपा कर यही नाम मन बांवरे
हरे राम हरे राम······

२

इसी नाम से भव के बधंन कर
हरे राम हरे राम······

३

यही नाम भव की सब बाधा हरे
हरे राम हरे राम······

४

भक्तो ने जब जब पुकारा तुझे
तब २ तूने दिया आके सहारा उन्हें

५

तेरे नाम सकंट दूर करे
हरे राम हरे राम हरे राम हरे

भजन २

प्रभु जी तुम बड़े दयालु हो
किसी ने तेरा भेद न पाया है
तेरा यश गीता वेदो ने
नेति नेति २ गाया है
प्रभु जी·····

२

अपरम्पर तेरी माया है
इस माया ने जग को नचाया है
दास तेरी शरणी आया है
यह माया से बच पाया है
प्रभु जी·····

३

माया के जजाल में फस कर
आया न तेरे द्वारे २
फिर भी प्रभु ने कृपा कीन्ही २
भरे मेरे भडारे २
प्रभु जी·····

४

माया के जजाल में फंस कर
आया न तेरी शरणी २
फिर भी प्रभु ने कृपा कीन्ही
लगा लिया अपनी चरणी २
प्रभु जी तुम·····

५

माया के जजाल में फंस कर
विसारा तेरा नाम २
फिर भी प्रभु जी कृपा करना
याद कराना नाम २
प्रभु जी तुम बड़े दयालु हो…

भजन ३

मेरे राम जी मुझ को देना सहारा
कही छूट जाये न तेरा द्वारा

२

तेरे रास्ते से हटाती है दुनियां
इशारो से मुझ को बुलाती है दुनियां
न समझु मैं जग का यहा झूठा इशारा
कही छूट जाये न तेरा द्वारा
मेरे राम जी… …

३

सिवा तेरे मन में समाये न कोई
लग्न का यह दीपक बुझाये न कोई
तू ही मेरा दीपक तू ही है उजाला
कही छूट जाये न तेरा द्वारा

४

इक पासे सागर छल्ले पैन घुमण घेरिया
इक पासे रहमता ते बख्शिशा तेरिआ

तूं ही मेरा चप्पु किश्तीं तू ही है किनारा
कहीं छूट जाये न तेरा द्वारा

५

किसे नू जवानी यौवन दौलता दा मान है
मैंनू तेरे चरणा दी धूलि उते मान है
तेरी इक तकन्नी ते मेरा गुजारा
कही छूट जाये न तेरा द्वारा
मेरे राम जी.....

आओ तो संतो के संग बैठ कर ज्ञान का प्रकाश मागें जिस से हमारे हृदय में सदैव शान्ति सन्तोष धर्म दया नम्रता आदि भावनांए स्थापित रहे और हम कभी भी दुःखी न हो क्योंकि जैसा कि गीता में आता है :-

"नर आप ही है शत्रु अपना
आप ही है मित्र भी
जो जीत लेता आप को
वह बन्धु अपना आप ही
जाना न अपने को स्वयं
रिपु सी करे रिपुता वहीं"

परन्तु अपने आप को कैसे जीता जाय इसी के लिए तो अपने प्रभु को पास समझते हुए अरदास करनी है कि ऐ मेरे परम दयालु सदा के साथी लोक परलोक के सुहेले मेरे हृदय में ऐसी सात्विक वृति कर दो कि हर जन्म में आप का ही साथ ले अर्थात प्रभु प्रेम की भावना सदा बढ़ती रहे ताकि मै अधोगति को न जाऊं।

हे प्रभो आप की कृपा से सारे दुःखो का नाश हो जाता है। हे प्रभो मुझे अपने नाम रुपी चरण कमलों का सदा आश्रय देना क्योंकि आप

पूर्ण है और आप का नाम लेते २ मैं भी पूर्ण अवस्था प्राप्त कर सकती हूँ। इसलिए कृपा करना कि मैं दिन रात आप के नाम का ही अभ्यास करूं। "श्री राम"

आप ही मेरे सर्वस्व है और हर जगह विद्यमान है, मैं सदा आप की ही शरण में हूं, आप का ससार में निर्मल यश है इसलिए आप का नाम लेने से यश भी निर्मल होता जायेगा।

(वेनती करो प्रकाश के लिए)

(शब्द)

दास तेरे की वेनती
मेरे हृदय करो प्रगास
" " " "

२

तुम्हरी कृपा ते पार ब्रहम
सब दोखन को नास
" " " "
दास तेरे की वेनती.....

३

चरण कमल का आसरा
प्रभु पूर्ण गुण ताम २
दास तेरे की.....

४

अनदिन नाम सिमरत रहा
जब लग घट में सांस २
दास तेरे की·····

५

मात पिता बन्धुव तू ही
तू ही सर्व निवास २
दास तेरे की·····

६

नानक प्रभु शरणागति
जां का निर्मल जास २
दास तेरे की वेनती·····

हमारे प्राणो के आधार राम है जो हमारी नस २ में शक्ति प्रवाहित हो रही है जो रोम रोम में रमण कर रहा है वही राम है इसीलिए कहा जा रहा है ऐ मेरे राम ऐ मेरे प्रभु तू मेरे प्राणो का आधार है।

और ज्यों २ हम उस के आगे झुकते है और नमस्कार करते है और अनेक प्रकार से बलिहार जाते है तो वह प्रकट होने लग जाता है।

"प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना
प्रेम से प्रकट होय में जाना"

सो हम उसे कण २ में रोम रोम में हाजिर नाजिर देखते हुए कहते है कि मै आप पर अनेक प्रकार से बलिहार हूँ। आप मुझे

ऐसी सुमति देना कि मैं उठते बैठते सोते जागते सदा आप कोयाद करूं अपना आपा मिटा दू मुझे हर समय तू ही तू नजर आये ऐसा अवश्य ही हो सकता है जब ज्ञान चक्षु खुल जाये तो ।

इसलिए ससांरिक सुख दुख की परवाह न करते हुए यह मन सदा आप के साथ ही निमग्न रहे वह कैसे हो सकता में जब मै आप को सदा अपना स्वंस्व समझु और परिवार भी तो आप ही हो क्योंकि उन में भी तो आप की ही ज्योति है ऐसा हरदम सोचने से मुझे अनुभव हो कि आप जो भी करते हो मेरे भले के लिए ही करते है इसलिए मुझे किसी बात का भी दुख न हो आप की पूर्ण कृपा मेरे पर रहे ।

कर कृपा प्रभु दीन दयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला

(शब्द)

प्रभु जी तू मेरे प्राण आधारे
नमस्कार डडौत वन्दना २
अनिक वार जाऊ वारे
प्रभु जी·····

२

ऊठत बैठत सोवत जागत
एह मन तुध ही चितारे प्रभु जी
तू मेरे प्राण आधारे

३

सुख दुख इस मन की वृथा
तुझ ही आगे सारे प्रभु जी
तुम मेरे.....

४

तूं मेरी ओट बल बुद्धि धन तुम ही
तुम ही मेरे परिवारे प्रभु जी
तू मेरे प्राण.....

५

जो तुम करो सोई भल हमरे
नानक सुख चरपारे
प्रभु जी.....

यह सारा ससांर मेरे प्रभु का दरबार है । हे प्रभु मुझे ऐसी बुद्धि दो कि मुझे हर जगह हर समय आप का दरबार ही आसित हो इसलिए सदैव ही मै आप के दरबार में ही पड़ी रहुं । ऐसा अनुभव होने से मुझे लगता है कि आप तो करोड़ो अवगुण खंडन करने वाले हो आप बिना मेरा कौन उद्धार कर सकता है । कौन इस माया ठगनी से बचा सकता है ।

आप को खोजते खोजते बहुत जन्म ही बीत गये परन्तु अब संतो की कृपा हुई तो पता लगा कि जीवन का उद्देश्य क्या है वह है अपने प्रभु की प्राप्ति, जिसे परमगति भी कहा गया है क्योकि पहले तो मैं केवल माया को साथ करके हार गया, माया ने बहुत नचाया ।

"अब में नाचयो बहुत गोपाल"

जब संतो का संग मिला हर समय हृदय में नाम का चाव उठा और उस का अभ्यास किया तो मेरे सारे दुख दूर हो गये मै आनन्द को प्राप्त हुआ मानसिक शारीरिक तथा दैवयोग वाले सारे दुखों का नाश हो गया क्याकि

"धर्म राय सब कागज फाड़े
राम नाम जो मुख से उचारे"

सब लेखे खत्म हो गये हर समय हरि गुण गाना अपने राम को रिझाना, ऐसे जीवन सफल हो गया।

"माखन खावे संत जनछाछ पिये ससार"

आप के नाम का जप करते २ सारे रोग नाश हो गये और मन आनन्द को प्राप्त हुआ।

(शब्द)

स्वामी शरण परिओ दरवारे
" " " "

२

कोट अपराध खंडन के दात्तें
तुझ विन कौन उभारे
" " " "
स्वामी शरण परिओ.....

३

खोजत २ वहु परकारे
सब अर्थ विचारे
" " "
स्वामी शरण परिओ.....

४

साध संग परम गति पाइए
माया रच बंध हारे
" " " "
स्वामी शरण·····

५

नानक अनद करे हरि जप २
सगले रोग निवारे
स्वामी शरण·····

(शब्द)

प्रभु पास जन की अपदास
" " " " "
तू सच्चा साई तू सच्चा साई

२

तू रखवाला सदा २
हऊं तुध घ्याई ३
प्रभु पास·····

३

एह जीअ जंत सब तेरेआ
तूं रहिया समाई ३
प्रभु पास·····

४

चिंता छड अचित रहो
नानक लग पाई ३
प्रभु पास·····

जो दास तेरे की निन्दा करे
तिस मार पचाई ३
प्रभु पास·····

व्याख्या

"ज्ञान अंजन गुरु दिआ
अज्ञान अन्धे विनाश
हरि कृपा ते संत भेटिओ
नानक मन प्रगास"

हे प्रभो आप का दास आप के सन्मुख हाथ जोड़ कर नत मस्तक हो कर वेनती कर रहा है मेरे हृदय में भी वैसा ही ज्ञान का प्रकाश करो जैसा आपने अपने भक्तों के मन में किया और वह मुक्त अवस्था को प्राप्त हुए आज भी आपके नाम के साथ उन का नाम आता है

जैसे :-

"जय मीरां के गिरधर नागर
सूरदास के श्याम
जय नरसी के सांवरिया
जय तुलसी दास के राम"

आप के नाम का प्रकाश हो जाने पर बाकी सब दुखों का नाश हो जाता है आप की कृपा होने से कोई भी दुख हमें दुखी नही करता।

चरणों का आसरा ही पूर्ण गुण ग्रहण करने योग्य बना देता है।

(शब्द)

चरण कमल संग लागी डोरी

" " " " "

२

सुख सागर कर परम गति मोरी
चरण कमल संग लागी डोरी

३

अचंल गहाइओ जन अपने को
मन बीधो बीधो प्रेम की खोरी

४

पूर्ण पूर रहियो कृपा निधि
आन न पेखो पेखो होरी
चरण कमल.....

५

नानक मेल लेहो दास अपना
प्रीति न कबहु न कबहु न थोरी
चरण कमल.....

(शब्द)

प्रभु लावो अपनी चरणी

" " " "

२

आये अनिक जन्म भ्रम शरणी
प्रभु लावो अपनी चरणी

३

उधर देह अन्ध कूप ते
लावो अपनी चरणी
प्रभु लावो·····

४

साध संगत के अचल लावो
एह विखम नदी जाय तरणी

५

सुख संपत माया रस मीठे
एह नही मन में धरणी २
प्रभु लावो·····

६

हरि दर्शन तृप्त नानक दास पावत
हरि नाम रंग आमरणी २
प्रभु लावो·····

(शब्द)

हरि कीरतन सुने हरि कीरतन गावे
तिस जन दुख निकट नही आवे

२

जां को अपनी कृपा धारे
सो जन रसना नाम उचारे
हरि बिसरत सहसा दुख व्यापै
सिमरत नाम भ्रम भउ भागे
हरि कीरतन.....

३

हरि की टहल करहे जन सोहे
तां को माया अगनि न पोहे
मन तन मुख हरि नाम दयाल
नानक तजिअले अवर जजाल
हरि कीरतन.....

(शब्द)

शरणी आइओ नाथ निधान
" " " "

२

नाम प्रीत लागी मन भीतर
मांगन को हरि दान
शरणी आइओ.....

३

सुख दाई पूर्ण परमेश्वर
कर कृपा राखो मान
शरणी.....

४

देहि प्रीत साधू संग स्वामी
हर गुण रसन बखान
शरणी……

५

गोपाल दयाल गोविन्द दामोदर
निर्मल कथा ज्ञान
शरणी……

६

नानक को हर के रंग रागो
चरण कमल संग ध्यान
शरणी……

(शब्द)

ठाकुर विनती करन जन आइओ
सर्व सुख आनन्द सहज रस
सुनत तुहारो नाइओ
ठाकुर विनती……

२

कृपा निधान सुख के सागर
जस सब जग में छाइओ
ठाकुर……

३

संत संग रंग तुम कीए
अपना आप दृटाइओ
ठाकुर……

४

नैनों सगं संतन की सेवा
चरण झार के सहइओ
ठाकुर विनती......

५

आठ पहर दर्शन संतन का
सुख नानक एह पाइओ
ठाकुर विनती .....

(शब्द)

राम गुसइयां जीअ के जीवना
मोहे न विसारो मै जन तेरा
मोहे न विसारो .....

२

मेरी संगत पोच सोच दिन राती
मेरा कर्म कुटिलता जन्म कुभांति

६

मेरी हरो विपत्ति जन करो सुभाई
चरण न छाडू शरीर कल जाई
राम गुसइया......

४

कहे रविदास परऊ तेरी साभा
वेग मिलहो जन कर न विलम्वा
राम गुसइया......

व्याख्या

जब मनुष्य भगवान की शरण चला जाता है तो उसे सान्तवना मिलती है विश्वास हो जाता है कि मेरा राखनहार तो सदा मेरे साथ है वह सदा उसी के साथ बात करता रहता है। कहता है हे प्रभु आप तो मेरे सदा रक्षा करते आये, कर रहे हो और करोगे।

"गर्भ अग्नि जिन आप उभारिया"

जिसने गर्भ की अग्नि में रक्षा की है। हे प्रभु आप सुन्दर हो सुघड़ हो। आप अपनी कृपा रखो सदा मेरे नेत्र आप का दर्शन कर के पवित्र हो जाते हैं और आप की चरण रज सदा शिरोधार्य है रोज रोज ऐसा नियम बांधने से मेरे जीवन में एक **Change** आयेगा वह क्या ? कि अब मुझे हरि रस गाने में सुनने में रस आने लगा। क्योंकि राम नाम गा व सुन वही सकता है जिस पर अपार हरि कृपा हो नही तो कई और हो जाते है जैसा कि तुलसी दास जी कहते है।

"तुलसी पूर्वज पाप से
हरि चर्चा न सुहाये
जैसे ज्वर के वेग से
भूख भस्म हो जाये"

सो निरन्तर संतो के दर्शन से रोज २ शीश झुकाने से तथा चरण रज लेने से अब वह **Change** आया कि मेरा मन अब हरि नाम लेने में रस लेने लगा और गोपाल मेरे हृदय में बस गये है।

अब हर दम मंगलमय रुप मुझे दिखाने देने लगा कि हर समय आनन्द ही आनन्द हो गया और वचन भी रस पूरी हुए कहते है अभी तो यह सारी क्रिया हो रही है ऐसा करना अपना जीवन बनाने का अनुभव करना मानो मैं भक्तों की लाईन में आ गया हू और सदा सतगुरु की शरण में हूं, उन के नाम के सहारे ही अपना जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।

(शब्द)

तुम तो राखनहार दयाल

" " " "

२

सुन्दर सुघड़ बेअंत पिता प्रभु
आपे होवो कृपाल
तुम तो.....

३

नेत्र पुनीत भये दरस पेखे
माथे परऊ रवाल
तुम तो.....

४

रस रस गुण गावो ठाकुर के
मेरे हृदय बसो गोपाल
तुम तो.....

५

महा आनन्द मंगल रूप तुम्हरे
वचन अनूप रसाल
तुम तो.....

६

हृदय चरण शरण सतगुरु की
नानक बांधिओ पाल
तुम तो.....

(भजन)

तेरी बन जायेगी राम गुण गाय के

२

ध्रुव की बन गई प्रहलाद की बन गई
द्रोपदी की बन गई चीर के बढ़ाय के

३

धन्ना की बन गई सदना की बन गई
मीरा की बन गई कृष्ण गुण गाय के

४

ब्रह्मा की बन गई शंकर की बन गई
नारद की बन गई वीणा बजाय के

५

अहिल्या की बन गई शबरी की बन गई
विभीषण की बन गई शरण में आये के

६

विदुर की बन गई सुदामा की बन गई
मोर ध्वज की बन गई आरा के चलाय के

७

चेता की बन गई सैना की बन गई
नरसी की बन गई हुंडी तलय के
तेरी बन जायेगी·····

(भजन)

लूट लो जिस का जी चाहे
मैं शोर मचाऊं गली २
राम नाम के हीरे मोती
मैं बिखराऊं गली गली
लूट लो……

२

जिस जिस ने यह हीरे लूटे
वह तो मालो माल हुए
धन दौलत के बने पुजारी
वो आखिर कगांल हुए
राम कृष्ण और गौतम के
इतिहास सुनाऊं गली २
लूट लो……

३

दौलत के दिवानों सुन तो लो
इक दिन ऐसा आयेगा
धन यौवन और रुप खजाना
यही धरा रह जायेगा
सुन्दर काया माटी होगी
चर्चा होगी गली गली
लूट लो……

४

मित्र प्यारे सगे सम्बन्धी इक दिन तुझे जलायेंगे
जिन को तू अपना कहता है
अग्नि पर सुलायेंगे
जगत सराय दो दिन की
आखिर होगी चला चली
लूट लो·····

५

जिन को अपना कह कर वन्दे
तू इतना इतराता है
छोड़ेंगे यह सब विपत्ति में
कोई साथ न जाता है
दो दिन का यह चमन खिला है
मुरझायेगी कली कली
लूट लो·····

६

झूठे धन्धे छोड़ दे वन्दे
जप ले हरि के नाम को तू
क्यो करता है मेरी २
छोड़ झूठे काम को
तुझे समय यह फिर न मिलेगा
पछताये मल तली २
लूट लो·····

(शब्द)

राखा एक हमारा स्वामी
सगल घटा घटा का अन्तरयामी

२

ऊठत सुखिया बैठत सुखिया
भउ नही लागे जां ऐसे बुझिया

३

सोये अचिंता जाग अचिंता
जहां कहां प्रभु तू वरतंता

४

घर सुख वसिया वाहर सुख पाया
कहो नानक गुरु मन्त्र छटाइआ
राखा एक हमारा स्वामी·····

जब सतसंग के द्वारा जीव प्रभु की ओर बढ़ता है तो फिर वह किसी ओर भी ध्यान नही करता जैसे इस शब्द में बताया है।

अब तो मैं अपने ठाकुर की ओर चल पड़ी अब तो हरि नाम जप केवल नाम के लिए हो गया संसार की परिस्थितियो का इस के साथ कोई भी सम्बन्ध नही, सुख हो या दुख, सयोंग हो या वियोग कोई परवाह नही, गीता में भी ऐसे ही कहा है।

"तज धर्म सारे एक मेरी ही शरण को प्राप्त हो
मै मुक्त पापों से करुगां तू न चिन्ता व्याप्त हो"

सो इस का भावार्थ यह है कि जिस को निन्दा स्तुति दुख सुख, मान अपमान सब बराबर हो जाते है वही मेरा प्रिय भक्त है इसलिए गुरु साहब ने भी ऐसा कहा है।

(शब्द)

अब हम चली ठाकुर पै हार

२

जब हम शरण प्रभु की आई
राख प्रभु भावे मार
अब हम .....

३

लोकन की चतुराई उपमा
ते वैसरत जार
अब हम.....

४

कोई बुरा कहे भावे भला कहे
हम तन दीनो है डार

५

जो आवत शरण तुम्हारी हरि जीओ
तिस कृपा धार
अब हम.....

६

जन नानक शरण तुम्हारी हरि जाओ
राखो लाज मुरार
अब हम.....

व्याख्या

श्री राम

जैसा कि रामायण में आया है

"विन विश्वास भक्ति नही
ते ही विन द्रवहि न राम
राम कृपा बिनु सपनेहु
जीव न ले विश्राम"

अर्थात विश्वास के बिना भक्ति अधूरी है इस शब्द में हम विश्वास रख रहे है कि मेरा प्रभु मेरा हर जगह सहायक है "इत" जहां पर अभी हम है और आगे भी जहां जाना है, क्योकि जाना तो जरुर ही है।

"जो आया सो चलसी
सब कोई आये वारिये"

परन्तु धन्य है वह आत्मांए जो इस मनुष्य जन्म को हर प्रकार अपने आप को उस परमात्मा में लीन रखती है जिस का यह अशं हैं। वह सदा ऐसी अनुभव करती है वह हमें खेल भी खिला रहा है इन संसारिक वस्तुओं द्वारा और लाड भी दे रहा है, परन्तु इस में रमण नही हमने करना यह सब खिलौने है केवल खेलने मात्र के लिए अन्दर से नाम द्वारा, प्रभु ध्यान द्वारा अपने आप को उस परम सता से सदा जोड़े रखना है।

ऐसा आचरण कैसे बन सकता है जब जीव को नित निरन्तर सतसंग सतो की सेवा मिलती रहे तभी तो गुरु नानक देव जी कह रहे है कि सतों का संग पा कर मैं सदा अन्दर से अपने प्रभु के सगं मान रहता हूं।

"लोगन सिऊ मेरा ढाज बागा
मन पर राम नाम सगं लागा"

(शब्द)

प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई
मन मोहन मेरे जीअ को प्यारो
कवन कहा गुन गाई २
प्रभु मेरो.....

२

खेल खिलावे लाड लडावे
सदा सदा अनदाई २
प्रभु मेरो.....

३

प्रतिपाले बारिक की न्याई
जैसे मात पिताई
प्रभु मेरो.....

४

तिस बिन निमख नही रह साकिए
बिसर न कबहूं जाई
प्रभु मेरो.....

५

कहो नानक मिल संत संगत ते
मान भये लिव लाई २
प्रभु मेरो.....

व्याख्या

हे राम आप मेरी माया भी है और राम भी है इसलिए मैंने आप का नाम रामैया रख दिया मैं आप की शरण आया हूं आप मेरे अवगुण क्षमा क्यो नही करते ।

में क्या करूं मेरी तो संगत भी अच्छी नही है निशदिन माया के संग मेरा बसेरा है और मेरे कर्म भी ऐसे है में कुटिल हूं मेरे मन में इर्षा, द्वेष, काम, क्रोध रुपी चोर घुसे हुए है जो मुझे हर समय दुखी करते रहते है ।

आप मेरी विपत्ति हरो, मैं आप के नाम रुपी चरण श्वासों रुपी हाथो से ऐसे जोर से पकडुं कि अन्तिम श्वास तक आप का नाम मेरे साथ रहे, आप का ही ध्यान रहे ताकि मैं अद्योगति में न जाऊ ।

"अन्त काल जो नारायण सिमरे
वदतू त्रैलोचन ते नर मुक्ता
पिताम्बर जा के हृदय वसे"

गीता में भी तो भगवान ने यही कहा है हर समय मेरा ही चित रख तथा मेरा ही भजन कर फिर मैं तुझे सारे पापों से मुक्त कर दूगां ।

रविदास जी भी इसी प्रकार अपने राम से कह रहे है कि हे प्रभु मैं तेरी शरण में आ गया हूं अब मुझे जल्दी से मिल जाइये अब देर न कीजिए ।

(शब्द)

रामैया हऊ वारिक तेरा
काहे न खंडस अवगुण मेरा

२

मेरी संगत पोच सोच दिन राती
मेरा कर्म कुटिलता जन्म कुमाति
राम गुसइयां ······

३

मेरी हरहो विपत्ति जन करो सुगाई
चरण न छाडूं शरीर कल जाई
राम गुसइयां ······

४

कहे रविदास परस तेरी साभा
बेग मिलो जन करो न विलम्बा
राम गुसइयां ······

(व्याख्या)

मेरे राम का नाम ऐसा है जो भी इसे लेता है वह कितना भी पतित क्यो न हो पवित्र हो जाता है और सारे ससांर में माननीय हो जाता है परन्तु यह नाम कैसे मिलता है ।

जब भक्त का ऐसा भाव हो जाये कि हे प्रभो । आप सारी सृष्टि को तो धनवान कर दो उस में में भी हूं परन्तु मुझे समांर की सारी माया दे कर भी अपना जन बना कर रखना और मुझे उस में निर्लिप्त रखना

क्योंकि आप तो ऐसे दयालु है कि जीव की जात पात की ओर भी ध्यान न दे कर अपने भक्त को अपना लेते हैं ।

"जात पात पूछे नही कोई
हरि को भजे सो हरि का होई"

जो केवल आप के चरणो की भक्ति चाहता है उसे आप अपना बना लेते है । इस का उदाहरण हमें पिछला इतिहास देता है ।

नाम देव :- कपड़े प्रिंट करने वाला
कबीर :- कर्म करने वाला (जुलाहा)
त्रैलोचन :- एक गांव का जाट

इन सब को आपने अपना बनाया और मुक्ति दी वह सब कैसे हुए जब इन्होंने सतों का संग पाया और ऐसी बुद्धि पा ली जिससे राम नाम निकल भी न सके और केवल हरि कीरतन ही जीवन का आधार बना लिया ।

(शब्द)

ठाकुर ऐसो नाम तुम्हारो
पतित पवित्र लिये कर अपने
सगल करत नमस्कारो
ठाकुर.....

२
सगल सृष्टि को धणी करीजे
जन को अगं निरारो
ठाकुर.....

३
वर्ण जात कोऊ पूछे नाहिन
वाछंत चरण रवारो
ठाकुर ऐसो.....

४

नामदेव कबीर त्रैलोचन
मुक्त भये चमयारो
ठाकुर.....

५

साध सगं नानक तुई पाई
हरि कीरतन' आधारो
ठाकुर ऐसो .....

(व्याख्या)

केवल अमृत का पान करने से ही मन में शान्ति सन्तोष सुख, आनन्द आ सकता है परन्तु वह अमृत क्या है ?

केवल राम नाम :-

यह अमृत कैसे पीया जाये

केवल मात्र उच्चारण करने से

यह उच्चारण भी कैसे हो

सतों के सगं करने से और उन के साथ बैठ कर राम नाम उच्चारण करने से ।

इसीलिए इस शब्द में गुरु साहब कहते है ऐ मेरे मन इधर आ संसार की थोथी बातें सारी निकाल कर राम नाम का उच्चारण कर जिससे तेरे हृदत में अमृत टपकेगा तूं ससार में भी सब का प्यारा बन जायेगा और प्रभु भी तुझे प्यार करेगें ।

ऐसा नित्य प्रति अभ्यास करने से तेरे अन्दर के क्लेश भी धीरे २ मिट जायेगे और हरि के चरण (अर्थात) राम नाम तेरे हृदय में प्रवेश कर जायेगा ।

तुझे महा आनन्द का अनुभव होगा जब तेरी सहज अवस्था नाम वाली बन जायेगी यह सब तीन बातों से हो सकता है।

(१) प्रभु कृपा
(२) सतसंग
(३) अपना अभ्यास

सो इन तीनो को अपनाते हुए हम अपना जीवन सफल कर सकते है।

(शब्द)

उचरहो राम नाम लख वारी
अमृत रस सखी पीओ प्यारी

२

हरि सिमरत तेरे मिटे क्लेश
चरण कमल मन मांही प्रवेश
उचरहो·····

३

सुख सहज रस महा आनन्द
जय २ जीवे परमानन्द
उचारहो·····

४

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
नानक दीजे साध खाला
उचरहो·····

(व्याख्या)

ससांर के पदार्थ तो हमें अपने कर्मो से मिलते है पिछले कमाये हुए कर्मो का फल तो अभी हमें मिल रहा है और अब कमाये कर्म हमें आगे के लिये मिलेगें परन्तु, नाम सिमरण हमें केवल प्रभु कृपा से ही मिलेगा ।

इसलिए जो चाहते है कि इस ससांर में जिस वस्तु की प्राप्ति के लिए आये है वह मिल जाये अर्थात हरि नाम धन कमा के जाये उन्हे शब्दों के द्वारा भजनों के द्वारा, चौपाइओ के द्वारा कृपा मागंनी चाहिए जैसा कि गुरुवाणी में गुरु साहब अरदास कर रहे है । हे गोविन्द आप अपना नाम जपाओ इस नाम के जपने से मुझे बड़े लाभ है ।

(१) ससांर के सब विषयों से मुझे उभार लोगे क्योंकि अगर आप की कृपा से नाम जप शुरु हो गया तो अपने आप ही बाकी सारे विषय समाप्त हो जायेगे ।

(२) आप के नाम जप से मेरे सारे भ्रम भय मोह आदि भी दूर हो जायेगें ।

(३) आप की लग्न लगने से मेरे मन में नम्रता आ जायेगी और यह मन सब की चरण रज बन जायेगा इस से कई कष्ट दूर हो जायेगे क्योंकि अहं की कई कष्टों की जड़ है ।

(४) परन्तु यह सब केवल आप की भक्ति आने से ही हो सकता है इसलिए भक्ति का क्षोत संसो का संग सदा देते रहना ।

बिन सतसंग विवेक न होई
राम कृपा बिन सुलभ न सोई

(शब्द)

करो कृपा गोपाल गोविन्द
अपना नाम जपाओ

२

अपना नाम जपाओ
हरि अपना नाम जपाओ
करो कृपा.....

३

हरि हरि हरि गुन गाओ
" " " " "
करो कृपा.....

४

काढ लिये प्रभु आन विखे ते
साध सगं मन लाओ
" " " २
करो कृपा.....

५

भ्रम भऊ मोह कटिओ गुरु बचनी
अपना दर्श दिखाओ
" " "
करो कृपा.....

६

सब की रेण होय मन मेरा
हरि अहं बुद्ध तजाओ
" " " "
करो कृपा .....

७

अपनी भक्ति दे दयाला
वड भागी नानक हर पावो २
करो कृपा.....

(भजन)

जगत में उन की मिटी है चिन्ता
जो तेरे चरणो में आ झुके है

२

वही हमेशा हरे भरे है
जो तेरे चरणो में आ झुके है

३

न पाया तुम को किसी ने बल से
न " " " " " छल से
उन्ही को पूजा हुई है पूर्ण
जो तेरे चरणो में.....

४

न पाया तुझ को अमीर बन कर
" " " " फकीर " "
कटे है उन के दुखो के बधन
जो तेरे.....

५

किसी ने पत्थर सनम बनाये
कोई भटकता है जंगलो में
जीवन सफल है उन का केवल
जो तेरे·····

६

कोई तो पूजे मसान मड़ियां
कोई भटकता है तीर्थो में
उन्ही को हुआ है दर्शन
जो तेरे·····

८

जो भी आया तेरे द्वारे
उसे मिले हैं सभी सहारे
झ ली उन की सदा भरी है
जो तेरे·····

(भजन)

भगव न आप के चरणो में
जब प्यार किसी का हो जाये
दो चार की तो बात है क्या
ससार उसी का हो जाये

२

भिलनी ने क्या २ वेद पढे
शबरी क्या रुप की रानी थी
छल कपट का जिस में लेश नही
भगवान उसी का हो जाये

३

ध्रुव और प्रहलाद तो बालक थे
पर परमेश्वर के प्यारे थे
दुनिया का हो कर क्या करना
इक बार उसी का हो जाये

४

रावण ने राम से वैर किया
हर साल जलाया जाता है
बन भगत विभीषण शरण पड़ा
बेड़ा पार उसी का हो जाये

(भजन)

हे राम मैं तुम में रम जाऊं
ऐसी निर्मल बुद्धि कर दो

२

चित्त चिन्ता करता रैण दिवस
विषयों में आनन्द पाने को

३

हे सत्तचित्त आनन्द रुप प्रभो
मेरे चित्त को चेतन कर दो
हे राम·····

४

मेरा यह चंचल मन
सकल्पों का नित जाल बिछाये रहता है
हे सतचित आनन्द रुप प्रभो
मेरे चित्त की चिंता हर लो
हे राम ·····

५

पर दोष न देखु आखों से
न सुनु बुराई कानों से
सारा जग आनन्द रूप दिखे
ऐसी मेरी दृष्टि कर दो
हे राम.....

६

मुख से गुन गान करूं तेरा
और मीठ वचन उचारा करूं तेरा
अमृत की धार पिला दो प्रभु
इस वाणी में अमृत भर दो
हे राम.....

७

यह अंग प्रति अंग २ मेरा
लगे आप के चरणों में
जीवन अर्पण हो चरणों में
हे नाथ दया ऐसी कर दो

८

झुठा अहंकार हटा दो हरि
मोहे आत्म रुप दर्शा दो हरि
इस रूप में ही रम जाऊं
ऐसी निर्मल बुद्धि कर दो हरि

"कीरतन ध्वनि"

हरे रामा हरे रामा, रामा रामा हरे हरे
हरे कृष्णा हरे कृष्णा कृष्णा २ हरे २

२

हमने अपने आप की दे दी तुम को डोर
आगे मरजी आप की जाओ जिस ओर
हरे .....

३

नही विद्या नही बाहें बल नही तीर्थ नही दान
तुलसी ऐसे अनाथ की पत राखो भगवान
हरे रामा .....

४

जो सुख को चाहे सदा शरण राम की ले
कहो नानक सुन रे मना दुर्लभ मानुख दे
हरे रामा हरे रामा.....

५

राम नाम धुन गूंज से सब दुख जाते भाग
राम नाम धुन गूंज से सब सुख जाते जाग
हरे रामा ...

१

तुलसी या ससार में तीन वस्तु है सार
सतसंगत और हरि भजन तीसरा पर उपकार
हरे राम हरे राम.....

२

काम क्रोध मद लोभ को जब लग हृदय में खान
क्या पडित क्या मूर्ख दोनो एक समान
हरे रामा.....

३

राम नाम मणी दीप धर जीह्वा देहुरी द्वार
तुलसी भीतर व हेर जो चाहत उजियार
हरे रामा हरे रामा·····

४

राम भजन को आलसी भोजन को होशियार
तुलसी ऐसे जीव को बार बार धिक्कार
हरे राम हरे·····

५

तुलसी जग में आय के कर लीजे दो काम
देने का टुकड़ो भलो लेने को हरि नाम
हरे राम हरे राम·····

६

कृष्ण कृष्ण रटते रहो जब लग घट में प्राण
कभी तो दीन दयालु है, धुनक पड़ेगी काम
हरे राम हरे राम·····

७

कृष्ण हरि के नाम पर त्यागो धन और धाम
आवे वह निश्चय ही अन्त समय पर काम
हरे राम हरे राम·····

८

राम नाम की लूट है लूट सके सो लूट
अन्त काल पछतायेगा जब प्राण जायेंगे छूट
हरे राम हरे राम·····

९

सेवा को तो दो भले एक सँत एक राम
रमा जो दाता मुक्ति के संत जपावे नाम
हरे राम हरे राम .....

१०

सब दुख दाता राम है दूसर नाहिन कोय
कहो नानक हर भज मना अत सगाई होय
सुख में बहु संगी भये दुख में संग न कोय
कहो नानक हर भज मना अत सहाई होय
हरे राम हरे राम.....

"आदत ही डालनी है तो कैसी आदत डालो"

१

आदत है अगर कहीं जाने की
तो सतसंग में तुम जाया करो

२

आदत है अगर कमाने की
तो अच्छे कर्म कमाया करो

३

आदत है अगर अपनाने की
तो अच्छे कर्म कमाया करो

४

आदत है गुस्सा खाने की
तो मन पर गुस्सा खाया करो

५

आदत है अगर शरमाने की
तो पाप से तुम शरमाया करो

६

आदत है अगर गाने की
तो गीत प्रभु के गाया करो

On Marriage Anniyersery

पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव होते होते अब भारतवासी भी **Marriage Anniyersery** मनाने लगे हैं अच्छा है गुण तो सब के अपनाने चाहिए परन्तु साथ कोई उदेश्य रख कर।

जैसे इस संसार में शादी होना आवश्यक है क्योंकि यह भी प्रकृति का गुण है, परन्तु इस के साथ-साथ एक और भी रहस्य है जैसे स्त्री और पुरुष अगर दोनों एकाकार होकर रहे आपस में **Adjestment** रखे तो उनकी सारी कुल का उद्धार हो जाता है। जैसे इस संसार में वही नारी और पुरुष अच्छे माने जाते हैं जिनका आत्मिक एकाकार हो जाये वैसे ही आत्मिक संसार में वही जीव आत्मा धन्य है जो परमात्मा रुपी अपने अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक पति के साथ एकाकार करे नहीं तो मनुष्य चोला पाना भी व्यर्थ है क्योंकि एक मनुष्य पर्याय ही ऐसी है जिसमें आत्मा रुपी स्त्री ब्रह्म रुपी वर को वर सकती है और यह भी केवल सत गुरुओं की कृपा से सम्भव है जैसा कि मीरा बाई के निम्नलिखित भजन से प्रकट है :---

१

मै बऊरी मेरा राम भर्त्तार २
रुच रुच ता को करुँ शृंगार
मै बऊरी.....

२

भले निंदऊ २ भले निंदऊ लोग
तन मन राम प्यारे जोग
मैं बऊरी·····

३

वाद विवाद काहू सिऊ न कीजे
रसना राम रसायण चीजे
मैं बऊरी·····

४

अब जीअ जान ऐसी बन आई
मिलु गोपाल निशान बजाई
मैं बऊरी·····

५

उस तन निंदा करे जन कोई
नामे श्री रंग भेटल सोई
मैं बऊरी·····

इसमें नामदेव जी ने अपनी आत्मा रूपी वधू-पत्नि को कहते हैं। मैं तो अपने पति को प्रसन्न करने के लिए खूब शृंगार करूँगी कैसा शृंगार

१ सत
२ संयम
३ सेवा
४ नाम जाप
५ सतसंग

कहते हैं अगर यह करते करते भी लोग निन्दा करते हैं तो करने दो क्योंकि अब तो यह तन मन केवल अपने प्यारे राम का ही हो गया है। मन वचन कर्म केवल राम ही राम रह गया है।

मेरा तो यह हाल है कि राम नाम जप से समय ही नहीं है जो वाद विवाद करे क्योंकि वाद विवाद करने से भी तो समय व्यर्थ होता है वह समय भी मैंने तो नाम जप में लगाना है। हां जो कर्तव्य कर्म करने हैं वह तो अवश्य करने ही हैं क्योंकि वह तो राम की ही सेवा है।

जैसे एक खिलाड़ी केवल स्वर्ण पदक प्राप्त करने के लिए अपना दिन रात एक कर देता है परन्तु उस धुन में खाता भी है पीता भी है जैसा सरकार (Govt.) रहने को स्थान देती है रहता भी है परन्तु उस के मन में एक लग्न निरन्तर रहती है वह बैठा-बैठा खड़ा-खड़ा भी वही Practice करता रहता है। एक बार स्वर्ण पदक प्राप्त कर लिया तो सारे ससार में प्रसिद्ध हो गया इसी प्रकार जब निरन्तर नाम जप सेवा, सिमरण, लग्न से एक चित्त हो गया तो स्वर्ण पदक के अधिकारी बन गये बस फिर क्या

"जिस नीच को कोई न जाने
नाम जपत ओह चहु कुट माने"

ऐसे ही नाम देव जी कह रहे कि अब तो (गुरुवाणी) जी जान में राम धुन लागी, गोपाल धुन लागी कहते हैं चाहे कोई निन्दा करे या अतति कर अपने राम जी से भेंट कर के ही जायेगा।

१

हे गोविन्द हे गोपाल हे दयाल लाल
हे गोविन्द हे गोपाल हे दयाल लाल

२

प्राणनाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार
हे गोविन्द हे गोपाल हे दयाल लाल

३

हे समरथ अगम पूर्ण मोहि मया धार
अन्ध कूप महा भयान नानक पार उतार
हे गोविन्द हे गोपाल·····

४

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघ नास
हे पूर्ण हे सर्वमय दुख भजन गुण तास
हे गोविन्द हे गोपाल·····

५

हे संगी हे निरंकार हे निगुर्ण सब टेक
नानक दीजे नाम दान राखो हिय विवेक
हे गोविन्द हे गोपाल·····

६

हे अपरम्पर हर हरे है कभी होवन हार
हे सता के सदा संग निराधार आधार
हे गोविन्द हे गोपाल·····

७

हे ठाकुर हउ दासरो मै निगुर्ण गुण नहीं कोय
नानक दीजे नाम दान राखो हिय पिरोय
हे गोविन्द हे गोपाल·····

"कैसे अपना यह अमूल्य मनुष्य जन्म बितायें"

"उद्देश्य के साथ"

१

श्री राम श्री राम पुकारे चला जा
इसी नाम के तुं सहारे चला जा
श्री राम·····

२

बड़ी दूर है तेरे साहिल की मंजिल
अभी से भुजाये पसारे चला जा
श्री राम·····

३

न यमपुर की चिन्ता न बैकुण्ठ चाहे
जहां तेरी मर्जी वही ढाव पाये
तू माया से बच कर किनारे चला जा
श्री राम·····

४

मिलेंगे तुझे राह में रहवर अनेको
सब से विनय तुं गुजारे चला जा
श्री राम·····

५

कहे ढासी बिगड़ी अनेको जण्म की
अब तो तू सुधारे चला जा
श्री राम·····

(शब्द)

१

प्रभु लावो अपनी चरणी

" " " "

२

आये अनिक जन्म भ्रम शरणी
प्रभु लावो अपनी चरणी २
प्रभु लावो ....

३

उधर देह अन्ध कूप ते
लावो अपनी चरणी
प्रभु लावो .....

४

ज्ञान ध्यान कुछ कर्म न जाणा
नाहिन निर्मल करणी
प्रभु लावो .....

५

साध संगत के अचल लावो
एह विखम नदी जाये तरनी
प्रभु लावो ....

६

हर दरशन तृप्त नानक दास पावत
हरि नाम रंग आभरणी २
प्रभु लावो .....

शब्द

१

राम रंग कदे उतर न जाये
कर कृपा गुरु दिअर बुझाये
राम रंग.....

२

हरि रंग राता सो मन साचा
लाल रंग पूर्ण पुराव विधाता
राम रंग.....

३

सतह संग बैठ गुण गावे
ता का रंग न उतरे जावे
राम रंग.....

४

गुरु रंग से भये निहाल
कहो नानक गुरु भये हैं दयाल
राम रंग.....

५

राम राम संग कर व्यवहार
राम राम मेरे प्राण आधार
राम रंग.....

६

राम राम राम बिसर न जाई
कर कृपा गुरु दिआ बताई
राम रंग··· :

७

राम राम राम राम लिव लाई
राम राम राम राम सदा सहाई
राम रंग·····

८

राम नाम जप निर्मल भये
जन्म जन्म के किलविख गये
राम रंग·····

शब्द

१

जीवत से परवाण होय हर कीर्तन जोग
जमण मरण न तिन को जो हर लड़ लोग

२

साध संग जिन पाया सेई बड़ भागे
नाथ विसरे छग जीवण टूटे कच धागे

३

नानक धूड़ पुनीत साथ लख कोट परागे
जीवत से परवाण होय हर कीर्तन जागे

भजन

१

भगवान तुम्हारे चरणो में मै तुम्हे रिझाने आई हू
वाणी मे तनिक मिठास नही पर विनय सुनाने आई हू
भगवान तुम्हारे .....

२

प्रभु का चरणामृत पाने को है पास मेरे कोई पात्र नही
आंखों के दोनों प्यालो में, कुछ भीख मांगने आई हूँ
भगवान तुम्हारे.....

३

तुम से ले कर क्या भेट करु, भगवान तुम्हारे चरणों में
मै भिक्षुक हू तुम दाता हो सम्बन्ध बनाने आई हूँ
भगवान तुम्हारे.....

४

सेवा को कोई वस्तु नहीं, फिर भी मेरा साहस देखो
रो रो कर आज आसुओं का मै हार चढ़ाने आई हूँ
भगवान तुम्हारे.....

५

तेरे दर पर मै खड़ी हुई तेरी आशा पर उठी हुई
अपने प्रभु नाम की दो भिक्षा वसी यही मै आशा लाई हूँ
भगवान तुम्हारे.....

६

तेरे चरणों का आधार मुझे, तेरे दर्शन की है प्यास मुझे
मै तेरी हूँ तू मेरा है बस रिश्ता बनाने आई हूँ
भगवान तुम्हारे.....

भजन

१

मेरे मन में मेरे भगवान
बस अपना नाम रहने दो
तुम अपने नाम की भक्ति
सदा निष्काम रहने दो
मेरे मन में .....

२

नही मैं मान की भूखी
रही परवाह शौरत की
तुम्हारा नाम हो जाय
मुझे बदनाम रहने दो
मेरे मन में.....

३

खुशी क्या उस के मिलने की
जो मिल कर के बिछुड़ जाये
मै चाहती हू तड़पती हू
याद सुबह शाम रहने दो
मेरे मन में.....

४

अगर कटने नही देते
सबर से जिन्दगी मेरी
तुम अपने नाम की खातिर
बेशक वे आराम रहने दो
मेरे मन में.....

(अन्तिम प्रार्थना)

१

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले
गोविन्द नाम मुख से जब प्राण तन से निकले
इतना तो·····

२

श्री गंगा जी का तट हो या यमुना वंशी वट हो
और सावंरा निकट हो जब प्राण तन से निकले
इतना तो·····

३

श्री वृन्दावन का स्थल हो मेरे मुख मे तुलसीदल हो
श्री विष्णु चरण का जल हो जब प्राण तन से निकले
इतना तो·····

४

सन्मुख सावरा खड़ा हो तिरछा चरण धरा हो
मेरा मन यही अड़ा हो जब प्राण तन से निकले
इतना तो·····

५

सिर सोहाना मुकुट हो मुखड़े पर पैं काली लट हो
यह ध्यान मेरे घट हो जब प्राण तन से निकले
इतना तो·····

६

जब प्राण कंठ आवे कोई रोग न सतावे
तू दर्श यदि दिखावे जब प्राण तन से निकले
इतना तो·····

७

मेरे प्राण निकले मुख से तेरा नाम निकले मुख से
छुट जांऊ घोर दुख से जब प्राण तन से निकले
इतना तो·····

८

उस वक्त जल्दी आना वायदा न भूल जाना
नूपुर की ध्वनि सुनाना जब प्राण तन से निकले
इतना तो·····

९

यह नेक सी अर्ज है मानो तो क्या हर्ज है
कुछ तेरा भी फर्ज है जब प्राण तन से निकले
इतना तो·····

१

याद कर ले हरि को याद कर ले
दिल की दुनिया आवाद कर लो
सच्चे सतगुरु से रहमत मिलेगी
तेरी विगड़ी यह जिन्दगी मिलेगी
नाम जप ले हरि का नाम जप ले
हर काम दुनिया का अर्पण कर ले

२

सच्चे सतगुरु की यही निशानी
तेरे पर रखेंगे निगरानी
प्यार कर ले अब तू प्यार कर ले
सच्चे सतगुरु से तू प्यार कर ले

३

जो तू राम नाम को न भूले
तेरी यह मन कभी न डोले
ऐसी याव कर ले कर ले
दिल की दुनिया आवाद कर ले

(राममय जीवन कैसे हो)

१

मेरे रोम रोम से ध्वनि निकले श्री राम हरे २
मेरी जीह्वा हर पल यही सिमरे श्री राम हरे २

२

हर समय पुम्हारा चिन्तन हो
हर कर्म तुम्हारी पूजा हो
ऐसे मेरा जीवन बदले
श्री राम हरे २·····

३

में जग में देखु जहां कहीं
वस तेरी ही छवि दिखलाये
मै तूं का भेद न शेष रहे
श्री राम हरे २·····

४

कैसी भी विषय परिस्थिति हो
आधार न तेरा छूट सके
तेरे चरणों में ध्यान रहे
श्री राम हरे २· ···

५

जब दया दृष्टि हो जाती है
सूखी खेती हरियाती है
इस आस पै जन उच्चार रहे
श्री राम हरे २·····

६

प्रभु कैसे चिन्तन हो तेरा
जब मन की हलचल दूर रहे
सुख शान्ति मिले स्वाधीन रहू
अभिमान मिटे तेरे चरणों में
मेरे रोम रोम·····

७

हो राम तुम्ही और श्याम तुम्ही
शंकर भी तुम और दुर्गा भी
बिन भेद भाव के भजन करु
श्री राम हरे २·····

८

जब पूर्ण ब्रह्म प्रकाश हुआ
घट घट में उसी का वास हुआ
तेरा मै अब तो दास हुआ
मेरी व्यथा तुम्हारे चरणों में
मेरे रोम रोम·····

९

तेरे चरणों में मेरी प्रीति हो
और दूर जगत की रीति हो
माह दिवस सभी अब भले दिखे
भगवान तुम्हारे अनुभव से
मेरे रोम रोम·····

१०

तूं ही मेरा प्रीतम प्यारा है
और सारे जगत से न्यारा है
मुझे केवल तेरा सहारा है
रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में
मेरे रोम रोम·····

११

इस जीवन मे तेरी आस रहे
तुझ पर तूर्ण विश्वास रहे
अब डोले न जीवन की नय्या
इसे सहारा मिले तेरे चरणों में
मेरे रोम रोम·····

(मेरा जीवन आसरा)

१

तूं मेरा जीवन आसरा मेरे शहनशाह मेरे राम प्यारे
मै तां बस हुण जी रहिया दाता तेरे सहारे

२

फड़िया नी वाहवां दाता देवी तूं छोड़ न २
चरणा नाल लाई रखी देवी विछोड़ न २
जदो दा असां तैनूं जाणिया रंग माणिया
दुख मिट गये सारे
मै तां बस हुण जी·····

३

आठो पहर तेरिआ गावा कहानिया
चरणा नाल लाई रखी वड़िया मेहरवानिया
करांगी तेरी वन्दगी, सारी जिन्दगी
मेरे प्राण आधारे
मै तां बस हुण जी·····

४

आटो पहर तेरा चढ़िया सरुर है २
कण २ दे बिच दाता तेरा ही नूर है २
मै तो बस तेरी हो गई
तुझ मे खो गई मेरे प्राण प्यारे
मै तो बस हुण जी रहिया
दाता तेरे सहारे
तू मेरा जीवन·····

५

आठो पहर तेरा चढया सरुर हैं २
कण २ दे विच दाता तेरा ही नूर है २
मै तां बस तेरी हो गई तुझ मे खो गई
मेरे प्राण आधारे·····

भजन

१

साई भजन बिना सुख शान्ति नही
हरि नाम बिना आनन्द नही
साई भजन·····

२

प्रेम भक्ति बिना उद्धार नही
गुरु सेवा बिना निर्वाण नही
साई भजन·····

३

जब ध्यान बिना सन्तोष नही
प्रभु दर्शन बिना प्रज्ञान नही
साई भजन·····

४

दया धर्म बिना सत्कर्म नही
भगवान बिना कोई अपना नही
साई नाम बिना परमात्मा नही
साई भजन·····

भजन

१

तुम्हारे दर पै ए भगवान मै तज संसार आई हूँ
नही सुनता मेरी कोई, सुनाने तुम को आई हूँ

२

न मन अपना न तन अपना
न घर अपना न दर अपना
जो है अपना उसी के पास
मै खाली हाथ आई हूँ
तुम्हारे·····

३

नही अपना कोई जग मे
सभी स्वार्थ के नाते हैं
मै खा कर ठोकरे दर २
शरण तेरी में आई हूँ
तुम्हारे······

४

न थे तन्दुल सुदामा के
नही थे वेर भीलनी के
मै क्या लाई पिरो कर
आसुओं का हार लाई हू
तुम्हारे दर पै······

शब्द

१

मिलहु सतन के संग मोहे उधार लेहो २
विनय करु कर जोड़ हर हर नाम देहो
हर हर······

२

हर नाम मागहु चरण लागहो
मान त्याग हो तुम दया
कतहु न धावहो शरण पावहो
करुणामय प्रभ कर दया
हर हर······

३

सिमरत अकथ अपार निर्मल
सुनो स्वामी विनउ ऐहो
कर जोड़ नानक दान मागे
जन्म मरण निवार लेहो
मिलहो संतन के संग.....

१

प्रभु कीजे कृपा निधान
हम हरि गुण गावेंगे

२

हऊ तुम्हारी करु नित आस
प्रभु मोहे कब गल लाहवेगें

३

हम बारिक मुग्ध अजान पिता समझावेगें
सुत-सुत खिन्न भूल बिगाड़ जगत पित भावेगें

४

जो हर स्वामी तुम देवो सोई हम पावेगें
मोहे दूजी नही ठोर जिस पै हम जावेगें

५

जो हर भावे भक्त तिन्हा हरि भावेगें
ज्योति २ मिलाये ज्योति रल जावेगें

व्याख्या (जो मागे ठाकुर)

कहते हैं अपने ठाकुर से जो आप मागोगे वही मिलेगा परन्तु पहली शर्त है कि उसे अपना बनाओ हमने संसार में हर एक वस्तु अपनी बना ली है परन्तु राम को ही अपना नही बनाया जैसी **Attachment** हमारी इन अस्थिर वस्तुओं के साथ है वैसी अगर अपने राम से हो जाये तो बस सारा संसार ही हमारा हो जाये

"भगवान आप के चरणों में
जब प्यार किसी का हो जाय
दो चार की तो बात है क्या
संसार उसी का हो जाये"

कहते हैं जो राम को अपना बना लेता है वही वास्तविक अर्थ में राम का दास कहलाने योग्य है और दास जो भी मुख से बोलता है वह भी अवश्य ही सच हो जाता है

मोरे मन प्रभु अस विश्वासा
राम ते अधिक राम का दासा

केवल कृपा मात्र से दास के सारे दुख दूर हो जाते हैं जैसे कि श्री मद्भागवत में गज और ग्राह की कथा आती है। जब ग्राह ने गज को खूब तंग किया उसने पहले तो खूब अपना

शब्द

१

जो मांगे ठाकुर अपने ते
सोई सोई देवे
नानक दास मुख ते जो बोले
इहा उहा सच होवे
जो मांगे ठाकुर··· ··

५

चतुर्दिश कीन्हो बल अपना
सिर उपर कर धारियो
कृपा कटाक्ष अवलोकन कीन्हो
दास का दुख विदारिओ
जो मांगे ठाकुर.....

४

हरि जन राखे गुरु गोविन्द
राखे गुरु गोविन्द
कं२ लाये अघगुण सब मेटे
दयाल पुरख बखशिद
जो मांगे ठाकुर.....

भजन

१

महलों में नही जंगलों में नही
कुटियों में नही बगलों में नही
है प्रेम जहां भगवान वही
है प्रेम जहां.....

२

ए सेवक तू सच्चे मन से
कर प्रीति प्रभु के चरणों में
कहे वेद यही सब शास्त्र यही
है प्रेम जहां भगवान वही
है प्रेम जहां.....

३

तुम मन मे जपो उस की माला
सब जानता है जानने वाला
जंग में नही मंत्र में नही
में प्रेम जहाँ भगवान वही
है प्रेम जहा ···

४

कर सेवा दुनिया दारो की
बलहीन बेशक्त बेचारों की
मन मे तेरे हो राम वही
छवि उस की सुन्दर श्याम वही
है प्रेम जहां······

लगा रहे हरि चरणा दे नाल

१

लगा रहे हरि चरणा दे नाल
मन मेरा लगा रहे

२

उठत बैठत हरि हरि ध्याइये
मार्ग चलत हरि गुण गाइये
ऐसा करो करतार मन मेरा लगा रहे
लगा रहे हरि·· ···

३

हरि सिमरत तेरी जाय बलाय
सर्व कल्याण बसे मन आय
आये करेगें प्रतिपाल
मन मेरा लगा रहे .....

४

प्रभु चित्त आवे ताँ कैसी भीड़
हरि सेवक नाही जम पीड़
तेरे संकट हरे करतार
मन मेरा लगा रहे.....

३

तेरे भरोसे मैं लाड लडाइआ
तू मेरा पिता तू है मेरी मइया
तेरे नाल मेरा संसार
मन मेरा लगा रहे.....

व्याख्या (हम मूरख मग्ध)

इस शब्द में गुरु साहब अपने आप को मूरख तथा मुग्ध वर्ड से सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं इस का रहस्य भाव यह है कि जब तक जीव अपने आप को मुग्ध (अनजान) समझता है वह सब पापों से क्षमा कर दिया जाता है परन्तु साथ मूर्ख भी कहा।

ससारिक दृष्टि में भी अगर कोई किसी की वस्तु पर जबरदस्ती अपना अधिकार जमाता है उसे मूर्ख कहते हैं सो गुरु साहब हमें समझा

रहे हैं कि यह सारी सृष्टि उस सर्वशक्तिमान परम पिता परमात्मा की बनाई हुई है परन्तु हम ऐसे मूर्ख हैं कि हमे तो यह सारी चीजे केवल प्रयोग मात्र के लिए दी गई थी परन्तु हमने क्या किया इन्हें अपना समझ कर इन से **Actachment** कर ली इस लिए जब यह हमें मिली तो हम खूब प्रसन्न हुए परन्तु जब यह हमारे से बिछुड़ी तो अत्यन्त दुखी हुए बस यही आसक्ति हमारे दुखों का कारण बन गई।

परन्तु जब हमें प्रभु कृपा से सतसंग की प्राप्ति हुई तो यह सोया मन जागा हमने अपने प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना की है मेरे मालिक मै तो जप तप संयम कुछ भी नहीं जानता और यह प्रार्थना गुरु के द्वारा मै कर रहा हूँ। मै तो बिल्कुल निर्गुण हूँ और कर्ता धर्ता सब मेरा राम है जो इस शरीर में बैठ कर आप कर रहा है।

परन्तु यह सब हे प्रभु आप की कृपा से ऐसा मैने अनुभव किया कि अब मुझे केवल आप की ओर (आसरा है) मेरी तो मत भी थोड़ी है और ज्ञान ध्यान कुछ नहीं जानती।

शब्द

(हम मूरख मुग्ध अज्ञान अविचारी)

१

हम मूरख मुग्ध अज्ञान अविचारी
नाम तेरे की आस मन धारी
हम मूरख.....

२

उक्त सयाणप किछु न जाणा
दिनस रेण तेरा नाम वखाणा
हम मूरख.....

३

जप तप संयम कर्म न साधा
नाम प्रभु का मनहि आराधा
हम मूरख.....

४

मोहे निर्गुण गुण नही कोय
करन करावन हार प्रभु सोय
हम मूरख.....

५

किछु नही जाणा मत मेरी थोड़ी
विनवत नानक ओट प्रभु तोरी
हम मूरख.....

भजन

१

हर श्वास मे हो सिमरण तेरा
यू ही वीत जाये जीवन मेरा

२

तेरे नाम की मै जपु हरि माला
हो जाये मेरे मन मे उजाला
मै तेरी तू हो जाये मेरा
हर श्वास में.....

३

तेरी छवि मेरे मन मे समाये
हर दम मेरे राम तेरी याद आये
मेरा यह जीवन हो जाये तेरा
हर श्वास में ...

४

तू मेरा ठाकुर मै तेरी दासी
जन्म जन्म की मै हू प्यासी
बुझ जाये प्यास मेरी दर्शन हो तेरा
हर श्वास में... ...

५

राम तेरी प्रीत है जग से निराली
हर दत मेरा मन हरने वाली
तेरी लग्न मे बीते जीवन मेरा
हर श्वास में.....

करवा चौथ (अटल सोहाग)

१

मै तो वरुणी अटल सोहाग रे
मन लागो भजन मे

२

हर पल हर क्षण याद तेरी आवे
नाम तेरा मेरे मन को भावे
करु व्रत संयम दिन रात रे
मन लागो भजन मे
मै तो वरुणी.....

३

आठ पहर मेरे संग सत बहो
नाम सदा मैं तेरा रटत हूँ
अविनाशी मेरा सोहाग रे
मन लागे भजन में
मै जो वरुगी·····

४

सतगुरु ने मेरी रंग दी चुनरिया
मेरे राम पिया मै राम की दुलहनिया
कर आई सोलह शृंगार रे
मन लागे भजन में
मै तो वरुगी·····

भजन

१

याद कर ले हरि को याद कर ले
दिल की दुनिया आबाद कर ले

२

सच्चे सतगुरु से रहमत मिलेगी
तेरी सोई हुई आतमा जगेगी
प्यार कर ले प्यार कर ले
अपने सच्चे सतगुरु से प्यार कर ले
याद कर ले·····

३

सच्चे सतगुरु की यही है निशानी
हर दम रखेंगे वह निगरानी
उन्हीं संग व्यवहार कर ले
उन्हीं संग साथ कर ले
दिल की दुनिया आबाद कर ले
याद कर ले·····

४

उन की मर्जी हो तेरी मर्जी
हर दम रहना उन्ही की हर्जी
ऐसा प्यार कर ले तू सच्चा प्यार करले
दिल की दुनिया आबाद कर ले
याद कर ले·· ···

शब्द

१

कृपा करो हरे, हरे कृपा करो हरे
नानक माँगे दरस दान
कृपा करो हरे·····

२

जिन जिन नाम ध्याया तिन के काज सरे
हर गुरु पूरा आराधिआ दरगह सच खरे
कृपा करो हरे··· ··

३

सर्व सुख निध चरण हर भव जल विखम तेर
प्रेम भगति जिन पाइआ, विखिआ नाही जेर
कृपा करो हरे·····

४

कूड़ गये दुविधा नसी पूर्ण सच भरे
पार ब्रह्म प्रभु सेवेदे मन एक अन्दर एक धरे
कृपा करो हरे·····

५

माह दिवस मूर्त भले जिन को नदर करे
हरे जिनको नदर करे, नानक मागे दरस दान
कृपा करो हरे·····

भजन

१

माटी के पुतले काहे को विसारा हरि राम रे
काहे को विसारा हरि राम रे
माटी के पुतले·····

२

कोई कहे सोने के महल हमारे
कोई कहे वृन्दावन धाम हमारे
कोई यह न कहे प्यारे राम हमारे
माटी के पुतले·····

३

कोई कहे कितना परिवार तेरा
कोई कहे कितना व्यापार तेरा
कोई यह न कहे हरि से प्यार तेरा
माटी के पुतले .....

४

कोई कहे कितनी तेरी खेती वाड़ी
कोई कहे कितनी तेरी जिम्मेवारी
कोई यह न कहे चढ़ी राम खुमारी
माटी के पुतले ...

५

कोई कहे कितना धन खर्च किया है
कोई कहे कितना धन एकत्र किया है
कोई यह न कहे कितना नाम धन लिया है
माटी के पुतले.....

(अटल सोहाग)

१

मै तो वरुंगी अटल सोहाग
रे मन लागो भजन में

२

हर पल हर क्षण याद तेरी आवे
नाम तेरा मेरे मन को भावे
करुं व्रत संयम दिन रात रे
रे मन लागो भजन में
रे मन लागो.....

३

आठ पहर मेरे संग बसत हो
नाम सदा मै तेरा रटत हो
अविनाशी मेरा सोहांग रे
रे मन लागो·····

४

सतगुरु ने मेरी रंग दी चुनरिया
राम पिया मै राम की दुलहनिया
कर आई मै सोलह शृंगार
रे मन लागो·····

'मागऊ राम ते इक दान'

१

मागऊ राम ते इक दान
मागऊ रार ते इक दान २

२

सगल मनोरथ पूर्ण होवे
सिरु तुमरा नाम
मागऊ राम·····

३

चरण तुम्हारे हइय वासहि
संतन का संग पावऊ
मागऊ राम·····

४

शोक अग्नि मे मन न व्यापै
आठ पहर गुण गावऊ
मागऊ राम·····

५

स्वस्त अवस्था हरि की सेवा
मध्यन्त प्रभ जापण
मागऊ राम·····

६

नानक रंग लगा परमेश्वर
बहुड़ि जन्म न छापण
मागऊ राम·····

शब्द

१

भक्तां की टेक तूं सतां की ओट तूं
सच्चा सिरजण हारा

२

सच तेरी सामग्री सच तेरा वासारा
भक्तां की टेक·····

३

सतगुरु पास वेनंतिआ मिले नाम आधारा
तुठा सच्चा पातशाह ताप गया ससारा
भक्तां की टेक·····

४

तेरा रुप अगम है अनूप तेरा दरसारा
हऊ कुरबाणी तेरे आ सेवकां जिन हरि नाम प्यारा
भक्तां की टेक ....

५

गुरु नानक मिलिआ पारब्रह्म
तेरे चरणा को बलिहारा
भक्तां की टक.....

व्याख्या

भक्तों की तो आप टेक हैं और सतो की आप ओट हैं। टेक में और ओट में अन्तर है। भक्त वह है जो संसार में रहते हुए अपने राम की टेक लिए हुए है अर्थात् संसार में सारे काम करते हुए सदा अपने राम को याद भी करते रहते हैं और संत वह है जो संसार का सब त्याग कर के अपना सारा जीवन उस के अर्पण करते हैं जैसे कहा गया है भक्त कबीर, भक्त रविदास, भक्त नामदेव यह सब संसारी थे परन्तु प्रभु की निरन्तर लगन में रहते थे।

सिरजणहारा के नाम से भी उसे सम्बोधित किया है कि जल थल, कण कण में उस की सत्ता है परन्तु उस के प्रेम के द्वारा उस के नाम के द्वारा हम उसे प्रकट भी कर सकते हैं और जब वह प्रकट हो जाता है तो फिर भक्त कह उठता है कि आप की यह सारी सामग्री सच है, यह वासरा सच है कि इस के कण कण में आप वर्त्तमान हैं परन्तु ऐसी अवस्था तीसरा ज्ञान नेत्र खुलने के बाद होती है

"जल थल महिअल रहया भरपूरे
निकट बसे नाही प्रभु दूरे"

परन्तु

जिसनूं नदर करे सो ध्यावे आठ पहर हरि के गुण गावे जिस पर कृपा हो जाये वह आप के गुण गा सकता है। गुण गाने का यह मतलब भी नहीं है कि हर समय राम राम ही कहते रहें राम राम कहना तो इस लिए है कि उस को हम हर पल में अनुभव कर सकें।

यह अवस्था कैसे आयेगी जब हम अपने सतगुरु के पास

(कार्त्तिक पूर्णिमा)

(तीर्थ स्थान पर)

"जहां राम नाम है वही तीर्थ है"

१

तीर्थ हमारा हरि को नाम
गुरु उपदेसिया तत ज्ञान

२

नाम लेत मन प्रगट भया
नाम लेत पाप तन ते गया

३

नाम लेत सगल पुरबइआ
नाम लेत अठसठ गजनाया

४

नाम लेत दुख दूर पराना
नाम लेत अति मूढ़ सुगिआना

५

नाम लेत प्रगट उजियारा
नाम लेत छूटे जजारा

६

नाम लेत जम नेड न आवे
नाम लेत दरगय सुख पावे

७

नाम लेत प्रभु कहे शावाश
नाम हमारी साची रास

८

गुरु उपदेश कहिओ एह सार
हरि कीरत मन नाम आधार

९

नानक उधरे नाम पुनह चार
अवर कर्म लोकहि पतिआर

दोहें

१

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय
यह अभिलाषा हम सब की भगवान पूरी होय

२

राम नाम जपते रहो जब लग घट में प्राण
कबहुं तो दीन दयालु है भनक पड़ेगी कान

३

राम भजन को आलसी भोजन को होश्यार
तुलसी ऐसे जीव को वार वार धिक्कार

४

मेरा मुझ में कुछ नही जो कुछ है सो तेरा
तेरा तुझ को सौंपता क्या लागे मेरा

५

तेरे द्वार को छोड़ कर नही कही मेरी ठौर
आठ पहर निरखत रहुं राम तुम्हारी और

६

ऐसे मेरे राम है अनाथन के प्रभु नाथ
सदा संग मेरे वसे, मै हूं तेरी दास

'रोगी का प्रभु खडहो रोग'

१

रोगी का प्रभु खडंहु रोग
दुखिये का मिटावा सोग

२

निरधन को तुम देवहो धना
अनिक पाप जाये निर्मल मना

३

निथावे को प्रभु थान बिठावो
दास अपने को भक्ति लावो

४

सफल मनोरथ पूर्ण काम
दास अपने को देवो नाम

५

सगल भयान का भऊ नसै
जां के संग सदा प्रभु वसै

'आत्म चिन्तन पर कुछ विचार'

जब हम संसार में आये तो हमें भगवान ने दान में हमें कुछ चीजें दी जो कि हमरी अपनी नही अपनी चीज तो वह होती है जो मोल खरीद कर लाई जाय या कुछ प्रयत्न कर के ले ली जाय परन्तु हमें यह मनुष्य जन्म का चोला हमारी बुद्धि शक्ति (मन, आत्मा, बुद्धि दी) कि ए मानव तू इस का उपयोग कर के और ऊपर उठ।

परन्तु माया का ऐसा प्रभाव रहा कि इसने अपनी इतनी प्रबलता दिखाई कि मनुष्य जन्म पा कर भी यह ठीक पशुओं की तरह ही रह कर इस संसार से चल बसा क्योंकि खाना पीना, काम भोग करना, बच्चे पैदा करना यह तो पशु भी करते हैं।

कुछ भाग्यवान हुए जिन्होंने अपने जन्म को सफल करने के लिए

आओ तो शरण में पड़ें

१

रामा जिउ जानहु तिऊ तार
मै तेरी शरण पड़ी
शरण पड़ी मै तेरी· ···

२

अठसठ तीर्थ भ्रम २ आइओ
मन नही मानी हार
मै तेरी शरण·····

३

अब यह दासी राम भरोसे
आप ही पाले आप ही पोसे
आन पड़ी तेरे द्वार
में तेरी शरण·····

४

तूं मेरा जीवन तू प्राण आधार
तुझ बिन यह सब है छार
अब जम के कद निवार
मै तेरी शरण·····

५

द्वारे तेरे की बनी भिखारी
आ गई अब प्रभु मेरी वारी
मेरा आवागमन निवार
मै तेरी शरण·····

भजन

अपने मन को जगाओ हरि भजन में लगाओ
उठ जाग सवेरे नी जिदड़िये सुन सतगुरु के वाणी

१

हुण मतसंग कर लनी
जिदड़िये मौज वथेरी माणी

२

इस जन्म विच भला न कीता
न कोई चुराय कमाया
कर कर वदिया तूं दिन राती
हीरा जन्म गवाया
जम ऐवे मारनगे जिदड़िये
पीन न देगे पानी

उठ जाग·····

३

न रहे वडड़े न रहे छोटे
न रहे राजे राणे
थोड़े दिन ओह हस खेड के
कर के कूच मसाणे
तूं वी टुर जाणा नी
जिदड़िये ज्यो नहरा दा पाणी
तूं वी झुक जाना नी
जिदड़िये ज्यो तूंता दी टहनी

उठ जाग·····

जल्दी जल्दी भजन कर लो
यह जीवन व्यर्थ चला जा रहा है
जगाओ सोये हुए मन को
तभी कल्याण होगा।

भजन

१

भज गोविन्दा भज गोविन्दा भज गोविन्दा,
दुनियां है इक गोरख धन्धा भज गोविन्दा,

२

इस धन्धे में जो भजे गोविन्दा वही है बन्दा,
इस धन्धे में न जो भजे गोविन्दा वो बड़ा गन्दा

३

गुरु सेवा ते भगति कमाई
तब यह मानुष देही पाई
भज गोविन्दा.....

४

इस देही को सियरे देव
सो देही भज हर की सेवा
भज गोविन्दा.....

५

जब लग जरा रोग नही आया
जब लग काल ग्रसी नही काया
भज गोविन्दा.....

६

जो दिन आवे सो दिन जाई
करना कूच रहन थिर नांही
भज गोविन्दा·····

७

अब न भजस भजस कब भाई
आवे अंत न भजया जाई
भज गोविन्दा·····

विनय

१

तेरे प्रेम का प्रभु जी मैं हू भिखारी
झोली है दर पै तेरे पसारी

२

सुना है तेरे दर पै जो भी है आता
तेरे प्रेम का है वह वरदान पाता
तुझ पर भी कृपा करो मेरे दाता
बस जाये नयनो में छवि तेरी प्यारी
झोली है दर पै·····

३

तमन्ना है दिल में तेरा प्यार पाऊ
फकत तेरे चरणो से ही नेह लगाऊँ
तस्वीर तेरी हृदय में बसाऊँ
तेरे सिवा जाये भूल दुनिया सारी
झोली है दर पै·····

४

मेरी जिन्दगी मेरा तन प्राण तू ही
मेरे दिल का सतगुरु जी अरमान तू ही
मै हू तेरा सेवक और भगवान तूं है
करु तेरी पूजा मै वन के पुजारी
झोली है दर पै.....

५

आया हूं दर पै यही आस ले कर
बनु तेरे दासो के दासो का चाकर
करना सदा मुझ में पै कृपा प्रभुवर
छोड़ दासरे मै तेरी ओट धारी
झोली है दर पै तेरे.....

★★

मैनूँ सेवादार बना

औगनां दा मैं भरया मैनू चरणी अपनी ला
चंगा कम मै कदे वी न, कीता
नाम तेरा मै कदे वी न, लीता
मेरे औगनां ते पर्दा पा ।
औगन दा मै भरया·····

(१)

सह-सह दुःख मेरा दिल घबराया
जग तेरा मैनूं रास न आया
मेरे दिल दे दुःखड़े मिटा ।
औगनां दा मै भरया·····

(२)

मेहर करीं मेरे ऐब न खोलीं
पापां वाली, गठरी नू, कदी वी न खोलीं
मैनू दुःखां तों आजाद करा ।
औगुनां दा मै भरया·····

प्रार्थना

हे सर्व-शक्तिमान पिता,
हम आपके बच्चे हैं,
आप हमारी रक्षा करना
हम, क्रोध को शान्ति से जीतें,
लोभ को संयम से जीतें
मोह को, प्यार से जीतें।
पल-पल में आपका ध्यान करें
हमारी द्वैत बुद्धि को मिटाना।
सबके घर में सुख शान्ति देना,
रोगों का नाश हो,
क्लेशों का नाश हो।
सब जन सुखी रहे
आपका नाम लें
बस यही प्रार्थना है
स्वीकार करो, स्वीकार करो।

ओ३म् शां

मुद्रक : मनचन्दा आर्ट प्रेस, जे-१११, विष्णु गार्डन, नई

कृपा-धाम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

राम जी राम राम

कृपा धाम

C-2B, Janak Puri, New Delhi-110058. Ph. : 25517225